BA राजनीतिक सिद्धांत

1st year **Political Theory** (Major Subject)

अब होगी BA के साथ UPSC व अन्य प्रतियोगी परीक्षाओ की तैयारी | BA के नियमित एवं प्राइवेट छात्रो हेतु उपयोगी कक्षाए

LODHAJI CLASSES

Class - 06

Based on New Education Policy

राज्य की अवधारणा
Concept of State

Free Compelet BA on Youtube With Notes

By Lodhaji sir

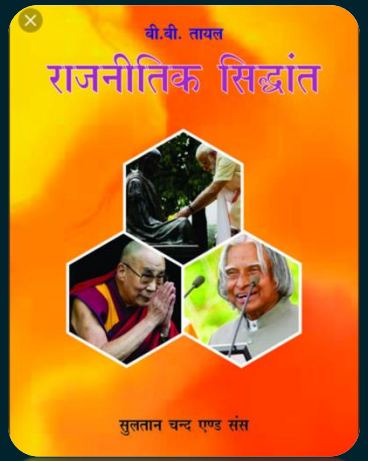

बी.बी. तायल
राजनीतिक सिद्धांत
सुलतान चन्द एण्ड संस

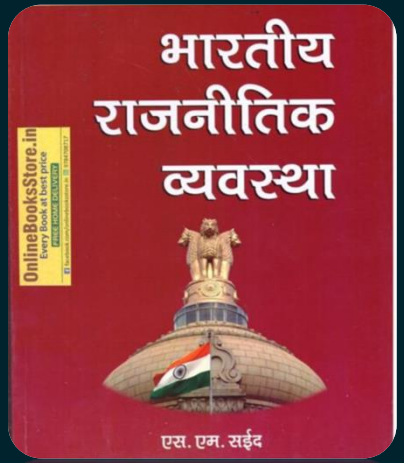

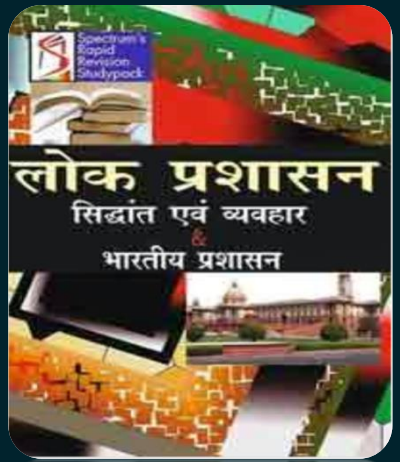

भारतीय राजनीतिक व्यवस्था
OnlineBooksStore.in
Every Book at best price
एस. एम. सईद

Spectrum's Rapid Revision Studypack
लोक प्रशासन
सिद्धांत एवं व्यवहार
&
भारतीय प्रशासन

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन

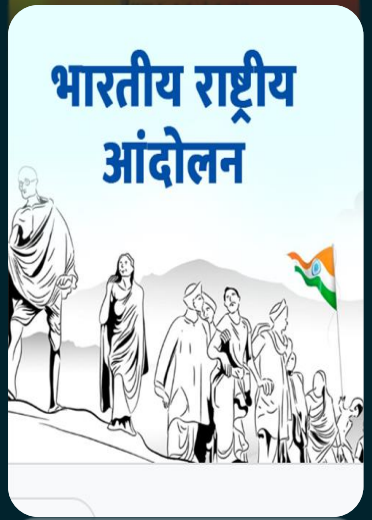

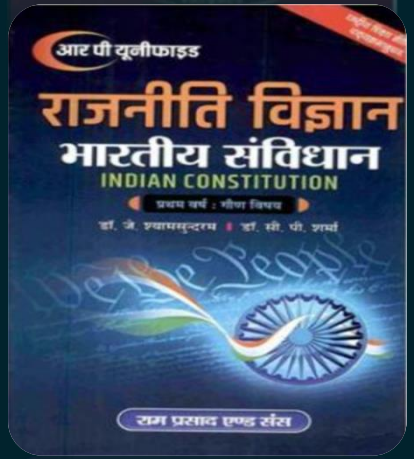

आर पी यूनीफाइड
राजनीति विज्ञान
भारतीय संविधान
INDIAN CONSTITUTION
प्रथम वर्ष : गौण विषय
डॉ. जे. श्यामसुन्दरम
डॉ. सी. पी. शर्मा
राम प्रसाद एण्ड संस

प्रतियोगी परीक्षाओ की तैयारी करने के लिए नए YouTube चैनल “प्रज्ञान हिंदी” को Join करे

UPSC, PSC, Railway, SI, Banking, SSC, POLICE

Unit - 2 (राज्य की अवधारणा)

1. राज्य को परिभाषित करना, राज्य के तत्व !
2. राज्य की उत्पत्ति के सिद्धांत।
3. राज्य की प्रकृति का बदलता स्वरुप।

Free Online Classes on Youtube - Complete B.A. with Notes By LODHAJI SIR

1. अर्थ

2. राज्य के आवश्यक तत्व

BA On Youtube

Free Online Classes on Youtube - Complete B.A. with Notes By LODHAJI SIR

राजनीति विज्ञान की प्रकृति / Nature of Political science

1. अर्थ

- राज्य अंग्रेजी शब्द ***State* का हिंदी अनुवाद** है। यूनान में राज्य के लिए *polis* और रोम में *Civitas* शब्द का प्रयोग किया जाता था। जिनका सम्बन्ध उस समय के नगर राज्यों से था।
- लेकिन वर्तमान में राज्य से आशय **राष्ट्रीय राज्य** से लिया जाता है।

● राज्य : आशय

✓ राजनीति विज्ञान में राज्य शब्द का एक विशिष्ट अर्थ है। यहां राज्य से आशय मनुष्यों के उस ***समुदाय*** से हैं जो एक ***निश्चित भूभाग*** पर स्थाई रूप से निवास करता है। जिसकी एक ***संगठित सरकार*** है, जो कि अपने आप में ***प्रभुत्व संपन्न*** और किसी भी नियंत्रण से मुक्त है।

Free Online Classes on Youtube - Complete B.A. with Notes By LODHAJI SIR

2. राजनीति विज्ञान, विज्ञान नहीं है

- **परिभाषा**
  - ✓ **गार्नर के अनुसार** - राज्य की अनेक परिभाषाएं हैं, जितने राजनीति विज्ञान के लेखक हैं उतनी ही राज्य की विभिन्न परिभाषाएं भी है।

- राज्य की परिभाषा के संबंध में इस प्रकार की विभिन्नता का कारण यह है कि राज्य के संगठन, उद्देश्य और कार्यों के संबंध में अलग-अलग समय पर विभिन्न प्रकार के विचार प्रचलित रहे हैं।

Free Online Classes on Youtube - Complete B.A. with Notes By LODHAJI SIR

2. राज्य के आवश्यक तत्व

- आज राज्य के संबंध में गार्नर के विचार मान्य हैं। उनके मत में –
  - ✓ 1) मनुष्यों का समुदाय।
  - ✓ 2) एक प्रदेश, जिसमें वे स्थाई रूप से रहते हैं।
  - ✓ 3) आंतरिक संप्रभुता और बाहरी नियंत्रण से स्वतंत्रता।
  - ✓ 4) जनता की इच्छा को कार्य रूप में परिणत करने हेतु एक राजनीतिक संगठन राज्य के आवश्यक तत्व है। इस प्रकार राज्य के चार आवश्यक तत्व है -

1) जनसंख्या
2) निश्चित भूभाग
3) सरकार
4) प्रभु सत्ता

Free Online Classes on Youtube - Complete B.A. with Notes By LODHAJI SIR

2. राजनीति विज्ञान, विज्ञान नहीं है

1) जनसंख्या

- राज्य के लिए सर्वप्रथम तो जनसंख्या चाहिए। जनसंख्या के अभाव में राज्य के अस्तित्व की कल्पना नही की जा सकती। लेकिन अब प्रश्न यह है कि जनसंख्या कितनी हो ?
- इस संबंध में ***गार्नर*** कहते हैं - राज्य के संगठन के निर्वाह के लिए जन संख्या ***पर्याप्त*** होनी चाहिए। परंतु उसे राज्य की ***प्रादेशिक सीमा व प्राकृतिक क्षमताओं*** से अधिक नहीं होना चाहिए।

Free Online Classes on Youtube - Complete B.A. with Notes By LODHAJI SIR

2. राजनीति विज्ञान, विज्ञान नहीं है

2) निश्चित भूभाग

- राज्य के लिए दूसरा आवश्यक तत्व **निश्चित भू-भाग** है। मनुष्यों का राजनीतिक समुदाय जब तक किसी निश्चित भूभाग पर स्थाई रूप से ना रहे, उसे राज्य नहीं कहा जा सकता।
- जिस प्रकार राज्य का वैयक्तिक आधार जनता है, उसी प्रकार उसका भौतिक आधार प्रदेश है।

- जनता उस समय तक राज्य का रूप धारण नहीं कर सकती, जब तक उसका कोई निश्चित प्रदेश ना हो। इसके अंतर्गत निम्नलिखित बातों को सम्मिलित किया जा सकता है -
  1. राज्य की सीमा के अंतर्गत आने वाला **भूमि प्रदेश**।
  2. भूमि प्रदेश का **जल भाग**। जैसे झीलें, नेहरे, नदियां आदि।
  3. **प्रादेशिक जल छेत्र**, जैसे किसी राज्य के समुद्र तट के आसपास 3 मील या 12 मील का समुद्र।
  4. राज्य की सीमा के अंतर्गत आने वाला **वायुमंडल**।

Free Online Classes on Youtube - Complete B.A. with Notes By LODHAJI SIR

3. राजनीति विज्ञान, विज्ञान है

3) सरकार

- राज्य के लिए जनता का **राजनीतिक रूप से संगठित** होना आवश्यक है।
- दूसरे शब्दों में उसकी **एक सरकार हो**। सरकार राज्य का संगठनात्मक तत्व है।
- सरकार के बिना राज्य की कल्पना नहीं की जा सकती है। सरकार राज्य का **मूल स्वरूप** है।

  सरकार ही राज्य की **इच्छा को निर्मित, प्रकट और कार्यान्वित** करती है।
- सरकार के द्वारा ही राज्य उन उद्देश्यों की पूर्ति की जाती है जिसके लिए उसका संगठन होता है।
- अतः निष्कर्ष के रूप में किसी राज्य के लिए सरकार आवश्यक है, भले ही उसका स्वरूप कुछ भी हो।

Free Online Classes on Youtube - Complete B.A. with Notes By LODHAJI SIR

3. राजनीति विज्ञान, विज्ञान है

4) प्रभु सत्ता

- प्रभुसत्ता या संप्रभुता राज्य का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। इसे राज्य का प्राण कहा जा सकता है।
- ***गेटिल*** ने कहा है कि प्रभुसत्ता ही राज्य का वह लक्षण है जो उसे अन्य समुदायों से अलग करता है। इसका अर्थ यह है कि ***जनता, भूभाग एवं संगठनात्मक*** तत्व तो दूसरे मानव समुदायों में भी मिल जाएंगे। फिर भी वे राज्य की श्रेणी में नहीं आ सकते, क्योंकि राज्य की तरह उन समुदायों के पास प्रभुसत्ता नहीं होती है।

प्रो. विलोबी के शब्दों में - प्रभुसत्ता राज्य की सर्वोच्च इच्छा है। प्रभुसत्ता से तात्पर्य यह है कि, राज्य अपने आंतरिक और बाहरी मामलों में स्वतंत्र हो।

- ***आंतरिक प्रभुसत्ता*** का अर्थ यह है कि, राज्य के भीतर कोई भी व्यक्ति अथवा संस्था उससे बड़ा या श्रेष्ठ नहीं है। सभी उसकी इच्छा के अधीन है।
- ***बाहरी प्रभुसत्ता*** का अर्थ यह है कि, राज्य पर किसी भी प्रकार का बाहरी नियंत्रण नहीं होना चाहिए। स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले भारत में राज्य के अन्य सभी तत्व होने के बाद भी वह राज्य नहीं था। क्योंकि भारत पर इंग्लैंड का बाहरी नियंत्रण था।

Free Online Classes on Youtube - Complete B.A. with Notes By LODHAJI SIR

Next Session will be on...

राज्य का विकासवादी सिद्धांत

Free Online Classes on Youtube - Complete B.A. with Notes By LODHAJI SIR

THANK YOU

New way of Learning….
https://t.me/lodhajiclasses

Telegram

सभी क्लास नोट्स के
pdf download
करने हेतु join करे
Link
LODHAJI CLASSES

प्रज्ञान
हिंदी